महत्वपूर्ण एवं खास

सुधर जाएं गुरुजी

दिल्ली के एक नामी प्राइवेट स्कूल की नौवीं की छात्रा पिछले दिनों जिस प्रक्रिया में खुदकुशी की ओर गई, उसके ब्यौरे रोंगटे खड़े कर देने वाले हैं। 15 साल की वह लड़की अपने एक शिक्षक द्वारा यौन उत्पीड़न की शिकायत कर रही थी। उसका कहना था कि संबंधित टीचर उसे फेल कर देंगे। बावजूद इसके, उसकी शिकायतों को न उसके परिवार ने, न ही स्कूल ने इतनी गंभीरता से लिया कि उसे इस जाल से निकल पाने का भरोसा मिलता। रिजल्ट निकलने के बाद अपना नाम फेल स्टूडेंट्स की लिस्ट में पाकर उसने खुदकुशी कर ली। दिल्ली में ही लगभग इसी तरह का मसला जेएनयू में उभरा है, जहां इस पर राजनीति का भी गहरा रंग चढ़ा हुआ है। एक प्रफेसर द्वारा अपनी रिसर्च स्कॉलर्स पर यौन संबंधों के लिए दबाव बनाना, राजी न होने पर रिसर्च में रोड़े अटकाना और बात सामने आ जाने के बाद इस पर राजनीतिक दांव-पेंच शुरू होना भारत को सभ्य समाजों की सूची से बाहर करने के लिए काफी है।बड़े फलक पर देखें तो हमारे देश में जहां कहीं भी पुरुष को ऐसी ताकत हासिल है कि वह किसी महिला या लड़की के हितों को प्रभावित कर सके, वहीं इसके दुरुपयोग की घटनाएं देखी जा रही हैं। इससे भी ज्यादा चिंता की बात यह है कि शिकायत मिलने के बाद भी उसे गंभीरता से नहीं लिया जाता। दिल्ली के दोनों हालिया मामलों पर वापस लौटें तो चाहे नौवीं की छात्रा के पिता और उसका स्कूल प्रशासन हो, या जेएनयू जैसी आला यूनिवर्सिटी के जिम्मेदार लोग, हर जगह ऐसा ही रवैया दिखता है। सुप्रीम कोर्ट के कड़े रुख के बाद ऑफिसों और कार्यस्थलों में महिलाओं को सुरक्षित माहौल देने की कुछ कोशिशें हुई हैं, हालांकि इनके अमल पर भी नियमित नजरदारी की कोई व्यवस्था नहीं बन पाई है। अच्छा होगा कि इस तरह के उपाय सभी शिक्षण संस्थानों में भी किए जाएं। हर जगह लड़कियों की शिकायत सुनने और दर्ज करने के लिए कोई संस्था हो, जो शिकायत की सचाई भी जांचे, पर शिकायतकर्ता को आरोपी के इकतरफा दबदबे से तत्काल मुक्त किया जाए। आरोपी चाहे टीचर हो, कोच हो, कला गुरु हो या कोई और, यह पक्का किया जाए कि जांच पूरी होने तक शिकायतकर्ता के मार्क्स और करियर पर उसका एकछत्र राज न हो।

दान की प्रेरणा

मालवा नरेश भोज एक दिन प्रातः रथ से होकर कहीं जा रहे थे। सहसा महाराजा भोज ने सड़क पर जा रहे एक तेजस्वी ब्राह्मण को देखा और कोचवान से रथ रोकने को कहा। वे रथ से उतरे तथा ब्राह्मण को हाथ जोड़कर प्रणाम किया। उन्हें देखते ही ब्राह्मण ने अपने दोनों नेत्र बंद कर लिये। उन्होंने राजा के अभिवादन के उत्तर में आशीर्वाद तक नहीं दिया। महाराजा भोज ने ब्राह्मण से विनम्रता से कहा–'आपने मेरे प्रणाम का न तो उत्तर दिया न ही आशीर्वाद के शब्द कहे। उल्टा अपने दोनों नेत्र बंद कर लिए। इस अनूठे व्यवहार का क्या कारण है?' 'महाराज, शास्त्रों में कहा गया है कि सवेरे-सवेरे किसी कृपण के सामने आ जाने पर नेत्र बंद कर लेने चाहिए। उसका मुख नहीं देखना चाहिए। आप परम वैष्णव तथा प्रजा वत्सल नरेश तो हैं परंतु दान देने में कृपणता बरतते हैं। इसी प्रकार शास्त्र वचन का पालन करते हुए मैंने सूर्योदय से पहले आपका मुख देखना पसंद नहीं किया।' शास्त्रज्ञ ब्राह्मण ने निर्भीकता से उत्तर दिया। महाराजा भोज ने उनके समक्ष नत्मस्तक होकर अपनी कमी स्वीकार की तथा उसी दिन से गरीबों को मुक्त हाथों से दान देना शुरू कर दिया।

आज भी शुद्ध पेयजल से वंचित हैं 7.5 करोड़ हिंदुस्तानी

यह एक कड़ी चेतावनी है, जिसे गंभीरता से लेने के अलावा और कोई चारा ही नहीं है। यूनेस्को की एक रिपोर्ट के मुताबिक 2050 तक भारत में भारी जल संकट आने वाला है। अनुमान है कि तीसेक सालों में देश के जल संसाधनों में 40 फीसदी की कमी आएगी। देश की बढ़ती आबादी को ध्यान में रखें तो प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता बड़ी तेजी से घटेगी। रिपोर्ट में कहा गया है कि उत्तर भारत में स्थिति पहले से ही बेहद खराब है। अब देश के और हिस्से भी इस संकट की चपेट में आ जाएंगे। गुरुवार को विश्व जल दिवस के मौके पर देश-दुनिया में पानी को लेकर कई जरूरी बातें हुईं, कई तथ्य सामने आए। सचाई यह है कि भारत में हालात इतने खराब हो गए हैं कि युद्धस्तरीय प्रयास के बिना कुछ हो ही नहीं सकता। जल संकट से निपटने को लेकर हमारे यहां जुबानी जमा खर्च ज्यादा होता है, ठोस प्रयास कम ही देखे जा रहे हैं। भारत में प्रति व्यक्ति के हिसाब से सालाना पानी की उपलब्धता तेजी से नीचे जा रही है। 2001 में यह 1,820 घन मीटर था, जो 2011 में 1,545 घन मीटर ही रह गया। 2025 में इसके घटकर 1,341 घन मीटर और 2050 तक 1,140 घन मीटर हो जाने की आशंका जताई गई है। आज भी करीब 7.5 करोड़ हिंदुस्तानी शुद्ध पेयजल से वंचित हैं। हर साल देश के कोई 1.4 लाख बच्चे गंदे पानी से होने वाली बीमारियों से मर जाते हैं। इस संकट की बड़ी वजह है भूमिगत जल का लगातार दोहन, जिसमें भारत दुनिया में अव्वल है। पानी की 80 फीसद से ज्यादा जरूरत हम भूजल से पूरी करते हैं, लेकिन इसे दोबारा भरने की बात नहीं सोचते। भारत में ताल-तलैयों के जरिए जल संचय की पुरानी परंपरा रही है। बारिश का पानी बचाने के कई तरीके लोगों ने विकसित किए थे। दक्षिण में मंदिरों के पास तालाब बनवाने का रिवाज था। पश्चिमी भारत में इसके लिए बावड़ियों की और पूरब में आहर-पईन की व्यवस्था थी। लेकिन समय बीतने के साथ ऐसे प्रयास कमजोर पड़ते गए। बावड़ियों की कोई देखरेख नहीं होती और तालाबों पर कब्जे हो गए हैं। संकट का दूसरा पहलू यह है कि भूमिगत जल लगातार प्रदूषित होता जा रहा है। औद्योगिक इलाकों में घुलनशील कचरा जमीन में डाल दिया जाता है।

हाल में गांव-गांव में जिस तरह के शौचालय बन रहे हैं, उनसे गड्ढों में मल जमा होता है, जिसमें मौजूद बैक्टीरिया भूजल में पहुंच रहे हैं। जल संकट लाइलाज नहीं है।

हाल में पैराग्वे जैसे छोटे, गरीब देश ने सफलता पूर्वक इसका इलाज कर लिया है। दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन शहर ने इस संकट से निपटने के रास्ते खोजे हैं। हमारे लिए भी यह असंभव नहीं है, बशर्ते सरकार और समाज दोनों मिलकर इसके लिए प्रयास करें।

राष्ट्र मंगल के लिए दमकी मणि

कल्पना से भी शरीर में सिहरन होती है कि रक्त जमाती सर्दी वाले बियावान बर्फीले रेगिस्तान में कोई महिला 403 दिन तक रह सकती है। उससे भी बढ़कर यह कि राष्ट्र सेवा के मिशन में अपना सर्वश्रेष्ठ देना। कल्पना करना सहज है कि -90 डिग्री तापमान में जहां जीने के अनुकूल परिस्थितियां ही न हों, वहां अनुसंधान के कार्य को सिरे चढ़ाया जाए। वह भी उम्रदराज महिला इस मुहिम को सिरे चढ़ाए तो उनके योगदान को राष्ट्र नमन करेगा। निश्चित रूप से यह एक महिला के बुलंद हौसलों की ही जीत है। ये असंभव को संभव कर दिखाने वाली भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान यानी इसरो की वैज्ञानिक मंगला मणि हैं। मंगला अपनी टीम के साथ नवंबर, 2016 में अंटार्कटिका स्थित भारतीय रिसर्च सेंटर 'भारती' गई। वे अपनी टीम में अकेली महिला थीं। दरअसल, अंटार्कटिका में तमाम विषम परिस्थितियों में मानवीय जीवन दुष्कर है। वहां का मौसम बेहद-सर्द और कठोर है। ऐसे में काम करने में बेहद सतर्कता बरतनी पड़ती है। स्थितियां इतनी जटिल होती हैं कि काम करते वक्त टीम के सदस्य दो-तीन घंटे से अधिक बाहर नहीं रह सकते। इसके तुरंत बाद जीने के लिए गर्मी लेने के लिए वापस स्टेशन लौटना पड़ता है। यदि ऐसा न किया जाए तो जीवन खतरे में पड़ सकता है। मंगला मणि के लिए यह अभियान एक बड़ी चुनौती थी। उन्होंने अपने जीवन में कभी बर्फबारी होते हुए भी नहीं देखी थी। फिर 56 वर्ष की उम्र में इस कष्टदायक अभियान का हिस्सा बनना अलग किस्म की चुनौती थी। कहते हैं न कि हमेशा पक्के इरादों और हौसलों की ही जीत होती है। इस बार भी ऐसा ही हुआ। मानवीय जीवन के लिए प्रतिकूल हालातों में रहकर काम करने की योग्यता हासिल करने के लिए मंगला को तमाम परीक्षाओं से गुजरना पड़ा। मिशन की अकेली महिला को शारीरिक क्षमताओं के परीक्षण के दौर से रूबरू होना पड़ा। उन्हें दिल्ली स्थित एम्स में कई मेडिकल जांचों की कसौटी पर खरा उतरना पड़ा। इसके उपरांत बर्फीले इलाकों में जीवन जीने के अनुभव भी हासिल करने थे। शारीरिक क्षमताओं को परखने-जांचने के लिए उत्तराखंड के बर्फीले इलाके ऑली और बद्रीनाथ ले जाया गया। जहां नौ हजार फीट की ऊंचाई पर भारी-भरकम इक्विप्मेंट्स के साथ ट्रैकिंग भी करनी पड़ी। इस तरह मंगला और इसरो की टीम के सदस्यों को अंटार्कटिका मिशन के लिए तैयार किया गया। दरअसल, अंटार्कटिका में स्थित 'भारती रिसर्च स्टेशन' भारत का तीसरा अनुसंधान केंद्र है, जो इसके पूर्वी तट पर अवस्थित है। यह वर्तमान में सक्रिय दो रिसर्च स्टेशनों में से एक है। इसके अलावा मैत्री नामक शोध स्टेशन वहां पहले से काम कर रहा है। एक अन्य रिसर्च फैसिलिटी को सप्लाई बेस के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। भारत दुनिया के उन नौ देशों में शामिल है, जिनके वहां एक से अधिक शोध केंद्र हैं। भारती शोध केंद्र में समुद्री शोध और अंटार्कटिका के भू-भाग पर शोध किया जाता है। मंगला इस परिवेश में काम करने वाली न केवल अकेली भारतीय महिला थी बल्कि वहां पहले से मौजूद रूस व चीन के रिसर्च स्टेशनों में भी कोई महिला सदस्य नहीं थी। निःसंदेह, मंगला मणि के हौसले और हिम्मत के कारण उन्हें नारी शक्ति का प्रत्यक्ष केंद्र कहा जा सकता है, जिसके लिए वे तमाम कसौटियों पर खरी उतरीं। शारीरिक-मानसिक परीक्षणों से गुजरीं। शरीर को तेज बर्फीली हवाओं को सहने की क्षमता के अनुकूल बनाया गया। कठिन वक्त में टीम वर्क की भावना के साथ काम करने की कला विकसित की गई। जिससे उपग्रहों के जरिए अंटार्कटिका की परिस्थितियों में हासिल डेटा के सटीक निष्कर्ष शोध केंद्र पर हासिल किए जा सकें। दरअसल, अंटार्कटिका गई इसरो की टीम रिसर्च स्टेशन पर ध्रुवीय कक्ष में परिभ्रमण कर रहे भारतीय उपग्रहों से विशिष्ट परिस्थितियों में हासिल डेटा जुटाती है। फिर मंगला की टीम इस अर्जित डेटा को कम्युनिकेशन सेटेलाइट लिंक के जरिए हैदराबाद स्थित केंद्र को भेज देती है। इस महत्वपूर्ण अभियान में निभाई गई भूमिका के लिए मंगला की दो संसदीय समितियों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। इस टीम में कुल 23 सदस्य शामिल थे। खुद को हमेशा नई चुनौतियां देने में विश्वास रखने वाली मंगला मणि ने आखिर साबित किया कि बढ़ती उम्र महज एक नंबर मात्र है। मन में यदि संकल्प हो तो कुछ कर गुजरने की कोई उम्र नहीं होती। मंगला ने यह भी साबित किया कि भले ही पुरुष शारीरिक रचना के हिसाब से ताकतवर हो, लेकिन स्त्री मानसिक रूप से ज्यादा सशक्त होती है।

बयान बहादुर की माफी

हालाांक अंग्रजा ने थैंक्यू और सॉरी शब्दों का प्रचार-प्रसार किया था। अब हमें भी ये अपने से लगने लगे हैं। वैसे इनसे ज्यादा प्रभावशाली शब्द तो हमारे राजनीति करने वालों ने चलाए हैं। जैसे बयान देना, आरोप लगाना, खंडन करना, खुद की कही बात को बाद में तोड़ी-मरोड़ी गई बताना, बात-वापसी, दलबदल, भक्ति भाव आदि-आदि। महानुभावों ने माफी को भी काफी बढ़ावा दिया है। आजकल एक बयान बहादुर की माफियां काफी चर्चित हैं। उनकी नई माफी ने तो पार्टी में भी काफी बवाल मचा रखा है क्योंकि माफी लिखित में या जुबानी वे बार-बार ऐसे उड़ा रहे हैं, जैसे सॉरी शब्द सर्र-सर्र करता रहता है। पहले तो वे आरोप लगाते हैं। वैसे वे का मतलब सिर्फ वे नहीं है, सब के सब हैं। फिर सामने वाला खुर्राट हो या खाली टाइम वाला हो तो अपनी कार्यवाही से माफी मांगने के लिये मजबूर कर देता है। आरोप लगाने वाला माफी मांगने में देर कर देता है, पर आरोपित माफ करते देर नहीं लगाता। इसका कारण आरोपों की प्रवृत्ति होती है। कभी यह कहा गया था कि एक झूठ को सौ बार बोलो, वह सच लगने लगेगा। पर अब कहा जा सकता है कि आप किसी पर भी कोई आरोप हजार बार लगाओ, वह आरोप ही रहेगा। सच-झूठ से उसका कोई संबंध नहीं होता। कभी ऐसा लगता है कि वह राजनीति वाला गया काम से। उस पर लगा यह सच्चा आरोप सच्चा ही साबित होगा। पर देखते ही देखते वह बरविद इज्जत होकर निश्कलंकावतार के रूप में नाचता नजर आने लगता है। कई बार साफ झूठा, मामूली-सा, मासूम-सा आरोप खंजर का काम कर जाता है। इसलिये आरोपित से माफी मांगने वाले को तुरंत माफी मिल जाती है। वैसे आरोप लगाने वाला भी कभी नहीं चाहता कि जल्दी से जांच हो। वह भी यही चाहता है कि आरोप की जांच, फैसला, लटका रहे ताकि इसके सहारे राजनीति करता रहे। सच्चे आरोपों की इतनी चर्चा नहीं होती, जितनी झूठे की होती है। सच्चे आरोप लगाने वाले भी कम ही सामने आते हैं क्योंकि एक सच को सच साबित करने के लिये उसे झूठ के सौ पांव लगाने पड़ते हैं। सच के अपने पांव नहीं होते। ऐसा कई प्रवचनकारों, पक्ष-प्रस्तुत करने वाले विशेषज्ञों ने बताया है। हां, वैसे आरोपण अजर-अमर होता है। माफी मांगने वाला भी अपने पिछले कथनों की माफी तो मांग लेता है, पर यह शपथ कभी नहीं उठाता कि आज के बाद कभी किसी पर आरोप नहीं लगाऊंगा क्योंकि वह जानता है कि राजनीति में सफलता के लिये झूठा आरोपण अमृत के समान होता है। देखना, हम अगले चुनाव युद्ध के दौरान भी आरोपों के घातक, अचूक हथिहार का प्रयोग करेंगे। फिर पक्ष में रहें या विपक्ष में, जरूरत हुई तो बड़ी ही सोफ्ट, नर्म-नाजुक शब्दा - वली में माफी भी मांग लेंगे।

राशिफल

मेष : दिन मिश्रितफलदायी है। नए कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी और नए कार्य कर पाएंगे। आज आपके मन में परिवर्तन शीघ्र आएंगे, जिससे आपका मन कुछ दुविधायुक्त रहेगा। छोटे प्रवास का योग है।

वृष : सही निर्णय नहीं लेने के कारण अवसर गंवा सकते हैं। वाद-विवाद या चर्चा में आपके हठीले स्वभाव से संघर्ष की स्थिति आ सकती है। आज आप वाक्चातुर्य से किसी को रिझा सकते हैं। भाई-बहनों में प्रेम बना रहेगा।

मिथुन : दिन की शुरुआत अच्छी रहेगी। मित्र या परिवार के सदस्यों के साथ भोजन का आनंद उठा सकते हैं। सुंदर वस्त्र धारण करेंगे। आर्थिक दृष्टि से आपके लिए दिन लाभदायी है। खर्च पर संयम रखें। किसी प्रियजन या मित्र से उपहार पाकर मन प्रफुल्लित रहेगा।

कर्क: आज आप मानसिक अस्वस्थता का अनुभव करेंगे। सम्बंधियों के साथ अनबन हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के पीछे खर्च होगा मुसीबतों का तत्काल निवारण करें। अकस्मात से संभलकर चलें।

सिंह : आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। दुविधापूर्ण मानसिकता के कारण अवसर गंवा सकते हैं। आपका मन विचारों में खोया रहेगा। नए कार्यों का आरंभ आज न करें। स्त्री मित्रों से मुलाकात होगी तथा उनसे लाभ भी होगा।

कन्या : नए कार्यों का आयोजन आज सफल होगा। पदोन्नति की संभावना अधिक है। अधिकारियों से लाभ होगा। धन, मान-सम्मान मिलेगा। पिता की ओर से लाभ होगा। परिवार में आनंद का वातावरण रहेगा। सरकार से लाभ होगा।

तुला: नए कार्य के प्रारंभ के लिए दिन अच्छा है। लंबे प्रवास या धार्मिक स्थल की यात्रा कर सकते हैं। व्यवसाय में लाभ का अवसर मिलेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा। संतानों के विषय में दुविधा रहेगी।

वृश्चिक: आज का दिन सावधानी से बिताएं। नए कार्यों का प्रारंभ न करें एवं क्रोध पर संयम रखें। अनैतिक कामवृत्ति से दूर रहें। सरकारी क्षेत्र से जुड़े नियमों के उल्लंघन से बचना होगा। अधिक खर्च होने से हाथ तंग रहेगा।

धनु : आज आपका दिन सुखपूर्वक एवं आनंद से व्यतीत होगा ऐसा गणेशजी को प्रतीत होता है। विपरीत लिंगीय व्यक्ति से भेंट रोमांचक होगी। विचार-परिवर्तन शीघ्र हो सकता है। लेखनकार्य के लिए दिन अच्छा है। उत्तम वैवाहिक सुख प्राप्त होगा।

मकर: धन लेनदेन में सरलता रहेगी। घर में शांति और आनंद का वातावरण बना रहेगा। आवश्यक कारणों के पीछे धन खर्च होगा। नौकरी में सहकर्मियों की तरफ से सहयोग प्राप्त होगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

कुंभ: आज आपके विचारो में परिवर्तन शीघ्र ही आएंगे। महिलाओं को अपने वाणी पर संयम रखना होगा। यात्रा यथासंभव टालें। आकस्मिक खर्च का योग है। पेट में तकलीफ हो सकती है, खान-पान का ध्यान रखें।

मीन : घर में परिवारवालों के साथ वाद-विवाद हो सकता है। महिलाओं के साथ व्यवहार में सावधानी बरतें। धन और कीर्ति की हानि हो सकती है। नौकरी करनेवालों को नौकरी में चिंता रहेगी।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं

1. खूब कसा हुआ, फूर्तिला, जो शिथिल व आलसी न हो 3. सार्वजनिक स्थान, संस्था, अस्तित्व, समिति 4. पौरुष, पुरुषत्व, मर्द होने का भाव 6. अंधेरा, अंधकार 7. लिपाई करना 9. शरीर, काया, जिस्म 10. मां के पिता, विभिन्न 12. महीना, मास 14. प्रियतम, बलमा, सजना 15. पांडवों का सबसे छोटा भाई 17. नशा, घमंड, खाता 19. वनोपज, वन से प्राप्त सामाग्री 21. शक्तिशाली, बलवान 24. तीव्र इच्छा 25. हथेली।

ऊपर से नीचे

1. निंदा, बुराई 2. निर्जीव, निष्प्राण 3. ध्वनियों या स्वरों का विशिष्ट लय में प्रस्फुटन, धुन, म्युजिक 4. झुका हुआ, विनीत 5. रूठे हुए को प्रसन्न करना, राजी करना 8. आश्रय, शरण 11. जन्म, जिंदगी 12. इंसानियत, मनुष्यता 13. रास्ता, मार्ग 14. एक हिंदी महीना, श्रावण 15. सपाट, जो उबड़-खाबड़ न हो 16. पति का छोटा भाई 18. गहरा कीचड़, पंक 20. आत्मा, अंत:करण (उ.) 22. बीता हुआ या आने वाला दिन 23. बगुला।

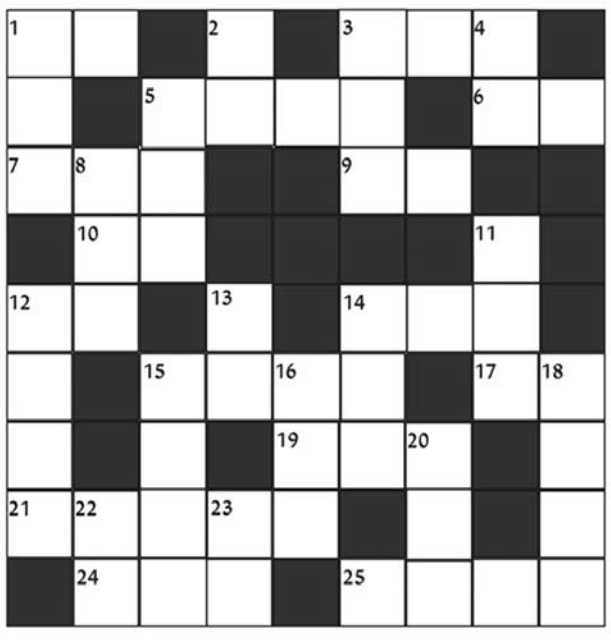

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 55 का हल

गु	मा	न	■	■	प	यो	द	■
न	■	ह	क	दा	र	■	ल	य
ह	वा	ला	त	■	च	■	द	म
गा	■	■	रा	ज	म	ह	ल	■
र	ई	स	■	ग	■	स	■	अ
■	मा	■	प	त	वा	र	■	ल
ख	न	क	ना	■	ह	त	■	बे
स	दा	■	ह	■	वा	■	शो	ला
रा	र	■	■	■	ही	र	क	■

सू-दोकू

	1			4			7	
		6	9		2			1
	7			6		8		2
1							8	
	8			5		2		3
3		2			4		1	
	3		2			4		
		8		1	6			7
9			4				2	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र. 55 का हल

3	9	6	8	2	5	4	7	1
8	2	5	1	7	4	6	3	9
7	1	4	6	9	3	8	2	5
1	8	9	3	6	7	2	5	4
2	6	7	5	4	8	1	9	3
5	4	3	9	1	2	7	8	6
6	7	2	4	3	9	5	1	8
9	5	1	7	8	6	3	4	2
4	3	8	2	5	1	9	6	7